International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-03-2022, Accepted: 27-03-2022, Published: 14-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 60-62

रविंद्र कालिया की कहानियों की मूल संवेदना

ज्ञानी देवी गुप्ता
हिन्दी विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय तलवंडी साबो, बठिण्डा, पंजाब, भारत

सारांश
रवीन्द्र कालिया की कहानियों की संवेदना के समुचित विश्लेषण के लिए यह आवश्यक है कि हम उनकी कहानियों की संवेदना से भलि–भांति परिचित हों। रवीन्द्र कालिया की कहानियों की संवेदना को हम संग्रहवार इस तरह विश्लेषित कर सकते हैं– हिन्दी में साम्प्रदायिकता को आधार बनाकर अनेक कहानियाँ लिखी गयी हैं। साम्प्रदायिकता को पंजाबी रचनाकारों ने बेहद करीब से देखा था, झेला था और महसूस किया था। इसलिए साम्प्रदायिकता को आधार बनाकर लिखने वालों में पंजाबी रचनाकारों की संख्या अधिक है। भारत में कुछ ऐसी असामाजिक विसंगतियाँ हैं जो आज भी भारतीय मानसिकता पर छायी हुई है। धर्म, जाति, लिंग एवं नस्ल के आधार पर भेदभाव करने की प्रवृत्ति आज भी समाज में विद्यमान है और जिनका प्रभाव प्रवासी भारतीयों में भी देखा जा सकता है। शीनी के डेट पर चले जाने पर रोती बिलखती अपनी माँ शील से नेहा कहती है, ''वह डेट पर गयी है व्याभिचार करने नहीं।''

मूल शब्दः बेहद सूक्ष्मता, साम्प्रदायिकता, सम्यक मूल्यांकन, प्रतिरोध, अजनबीपन

प्रस्तावना
पुरातन पंथी विचारों को लेकर चलने वाली पुरानी पी पर भरोसा रखो मॉम। देखो, बाहर मेरा दोस्त आया है। वह क्या राय बनाएगा हम लोगों के बारे में। चलो उठो, वह तुम्हारे हाथ के चीज़ पकौड़े खाना चाहता है। उठो, उठो मेरी बहुत अच्छी माँ।'''अतिथि देवो भवः' जैसी सूक्ति केवल भारत में ही पायी जाती है। ती है कि, ''बेसन की जितनी महीन पर्त रहेगी, पनीर पकौड़े उतने ही कुरकुरे और स्वादिस्ट बनेंगे।'' वह अपरोक्ष रूप से निक की नोटबुक में दर्ज करने के लिए यह नुस्खा बताती है। संस्कृति एवं परम्परा से युक्त जो भी भारतीय हैं वे उदार एवं निश्छल होते हैं किन्तु विदेशों में प्रायः ही ऐसा दिखाई देता है वे सहयोगी तो होते हैं लेकिन भारतीयों की तरह उनका स्वभाव नहीं मिलता है। शीनी की माँ निक को देखना भी नहीं चाहती वह उसके बारे में भलेबुरे विचार रखती हैं किन्तु जब से निक आया है वह उसके लिए पकौड़े तलने से लेकर नुस्खे बताने तक में व्यस्त है। जब निक उसके कैचप को चाट–चाटकर खाता है तो उसे और भी प्यार उमड़ता है और वह अप्रत्यक्ष रूप से उसे मेहनताना के तौर पर वह कह कर देती है, ''निक जाने लगे तो उसे कैचप की एक बोलत दे देना।'' शील ने कुछ रूककर, कहा ''रेकिंग और मोईंग का कुछ मेहनताना तो उसे मिलना ही चाहिए।'' भारतवासी बड़ों के सम्मान में पैर छूने एवं प्र ााम जैसी परम्परा का निर्वहन करते हैं किन्तु विदेशियों में इसका अभाव पाया जाता है वे स्पर्श करने एवं चुम्बन से ही अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करते हैं। जब निक शीनी की माँ को कैचप देने की खुशी में उनके गालों पर चुम्बन दे बैठता है तब इस बात पर शील नाराज होकर सोचती है, ''अंग्रेजों की यह छूनेछुआने की और चुमाचाटी करने की बहुत बुरी आदत है।'' 5 शील बुदबुदायी, ''इन्हें जरा भी तमीज़ नहीं है कि औरतों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।''6 1 ए.बी.सी.डी.–रवीन्द्र कालिया, पृ0 30 2 वही 3 वही, पृ0 31 4 वही 5 वही, पृ0 32 6 वही आधुनिक समय में लोगों की सोच बदली विचार बदले लेकिन रूसिं बेहतर दुभाषिए मिल जायेंगे। मुझे तो कई बार अपने माता–पिता की बातें ही समझ में नहीं आती।''3 इस बात पर जिम कटाक्ष करता है, ''इसी को जेनरेशन गैप कहते हैं।''वही आधुनिक समय में महात्मा लोगों के ओहदों एवं उससे होने वाले खुद के लाभ के वशीभूत भविष्यवाणियाँ किया करते हैं। उपन्यास में स्वामी जी इसी प्रकार के महात्मा हैं जो शीनी और जिम के बकर रह गया है। शील और हरदयाल अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ना चाहते वहीं उनके बच्चे भारतीय संस्कृति का समर्थन नहीं करते। शीनी जो शुरू से ही भारतीय संस्कृति की खामियों को उजागर करते आयी है। माता–पिता के विरुद्ध जाकर प्रेम विवाह कर फिर अपने भूरे पूरे परिवार को छोड़कर अपने सम्बन्धों से असन्तुष्ट होकर अपनी नयी दुनियां बसा लेती है।
मोहन राकेश, अज्ञेय, भीष्म साहनी, यशपाल, कृष्णा सोबती आदि ने विभाजन को करीब से देखा था। इसलिए इन्होंने साम्प्रदायिकता को आधार बनाकर अनेक कहानियाँ लिखीं हैं। रवीन्द्र कालिया ने भी साम्प्रदायिकता को आधार बनाकर अनेक कहानियाँ लिखी हैं। 'पनाह' ऐसी ही कहानी है। 'पनाह' कहानी में हिन्दू मुस्लिम सांप्रदायिक विद्वेष को बेहद सूक्ष्मता से विश्लेषित करती है। 'पनाह' कहानी हिन्दुस्तान के बहुसंख्यक हिन्दू मुसलमानों पर अत्याचार करते दिखाई पड़ते हैं। वास्तव में कहानी साम्प्रदायिकता का विरोध करती हुई हिन्दू मुस्लिम एकता का सन्देश देती है, ''खून चाहे हिन्दू का हो या मुसलमान का, खून बदन में चुपचाप बहता रहे, इससे बड़ी नियामत क्या हो सकती है।''
इनकी कहानी का स्वप्न है, ''इंसान बन के जिओं और दूसरों को जीने दो। कहानी में मुस्लिम साम्प्रदायिकता का भी विरोध है। मुस्लिम पात्र अपने समुदाय के लोगों से कहता है, ''यह नहीं समझते, दुनिया आगे जा चुकी है, कुछ टुकड़ों के लिए इंसान को मार डालते हो। सालो, मेहनत करो।'' कहानी में साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ने के लिए इंसानों और सरकार का आहवान किया गया हे 'मैं' कहानी व्यक्ति के गुणों एवं अवगुणों के साथ उसके व्यक्तित्व के सम्यक मूल्यांकन की कहानी है। व्यक्ति शातिर इतना है कि पापा के दफ्तर और माँ के सत्संग जाने पर गिरेबान से पकड़ लेगा, झापड़ भी

लगा सकता है। मुझे अपने में यह बात बहुत फनी लगी कि बीवी तो खाना बंद कर देगी और पति मुझे गिरेबान से पकड़ लेगा, जबकि मैंने उससे कुछ नहीं कहा होगा।''[2] 'विकथा' स्थापित कथा–मूल्यों का सशक्त प्रतिरोध है। शीर्षक से कथा वैशिष्ट्य तक यह प्रतिरोध देखा जा सकता है। अकहानी की समस्त विशेषताएँ विकथा में समाहित हैं। 'धक्का' कहानी अजनबीपन और अनजाने भय को अभिव्यक्त करती है। व्यक्ति अपने परिवेश के प्रति ही अनजान है। उसे यह लगता है कि कोई व्यक्ति उसकी हत्या कर सकता है। लेने के लिए अभिशप्त हैं। 'प्रेम' में विवाह से पूर्व कामकाजी प्रेमिका और प्रेमी की भविष्य की योजनाओं और रोज की दफ्तरी जद्दोजहद का चित्रण है। इस कहानी में नायक–नायिका दोनों बिल्कुल थके से, बे से, अनमने से एवं अपने कार्यालय एवं बॉस के प्रति असंतुष्ट से दिखाई पड़ते हैं। कहानी में महानगर में संढ़ौता है। 'कोजी कार्नर' कहानी भी पाश्चात्य प्रभाव के कार ा पति–पत्नी के टूटते रिश्तों की तरफ दशारा करती है। 'कोजी कार्नर' की मुख्य नायिका महानगरीय जीवन के संत्रास, ढ़ाई–लिखाई कर यह सपने देखता हो कि अपने पास ''एक छोटी सी कार हो, सुंदर सी बीवी हो, खूबसूरत सा बच्चा हो और अच्छी सी नौकरी हो।'' और ''अपनी तो यही इच्छा है कि एक बार इंजिनियर बन जाएँ बाकी फिर देखेंगे।''[3] आधुनिक व्यवस्था युवाओं में हताशा भर रही है तभी तो कपिल यह कहने के लिए विवश है कि ''मेरी कोई निश्चित इच्छा नहीं सब कुछ बन जाना चाहता हूँ। इंजिनियर, डॉक्टर, राइटर और मजिस्ट्रेट।''[4] इंजिनियर, डॉक्टर, राइटर और मजिस्ट्रेट बनने का स्वप्न देखने वाला युवक मोटर मेकेनिक बनने के लिए अभिशप्त है क्योंकि उसके बाप के पास फीस देने के लिए पैसे नहीं हैं। कहानी सभी से श्रम एवं मानवता के सम्मान की अपील करती है। यह रवीन्द्र कालिया की बहुचर्चित कहानियों में से है। यह दाम्पत्य जीवन पर लिखित हिंदी ही नहीं विश्व की महत्त्वपू र्ा कहानियों में गिनी जाती है। यह कहानी अपने प्रकाशन के समय चर्चा में ही नहीं अपितु विवादों में भी रही। इस सन्दर्भ में रवीन्द्र कालिया कहते हैं, ''जब 'नौ साल छोटी पत्नी' लिखी तो राकेशजी ने कहा था कि यह बहुत ही खराब कहानी तुमने लिखी है–तुम्हारी शादी नहीं हुई इसलिए तुम नहीं जान सकते की पति पत्नी के बीच में ऐसा एक भी पत्र पकड़ा जाए तीसरे व्यक्ति का तो पति–पत्नी की क्या दशा हो सकती है। जबकि मेरी सारी कहानी इसी को रिफ्यूट करते हुए लिखी गयी थी। पति पत्नी द्वारा दहेज में ले आयी चिट्ठी को प पता। वह यह नहीं समझ पाता कि उसकी पत्नी उसके साथ की भूखी है। वह यह नहीं समझ पाता कि उसकी पत्नी के पैरों पर नहीं बल्कि उसके मन पर चोट लगी है। दाम्पत्य जीवन की नीरसता और अपने पर बहुत भारी पड़ा था। मुझे अपनी पत्नी का ख्याल आया, जो दूसरे कमरे में बैठी मातम कर रही थी और अपने दोस्त का। मेरी बांह जैसे जड़ हो गयी थी, बहुत चाहने पर भी उसे उठाकर अलग नहीं कर पाया। थोड़ी देर बाद मेरी बांह पड़े–पड़े कांपने लगी। हे ईश्वर, इस औरत को सद्‌बुद्‌धि और शक्ति दो। मैंने कहा।'' हमारे सामाजिक संस्कार अवचेतन अवस्था में भी रहते हैं। कहानी में जब दोस्त की मौत होती है तो यह संस्कार अपराधबोध के रूप में सामने आता है। मृत दोस्त का कमरे में आकर खड़ा हो जाना इसी संस्कार एवं अपराधबोध का सूचक है। पति की मृत्यु के बाद पत्नी असुरक्षा भाव से गुजरती है। निराश्रित पत्नी को आशंका रहती है की परिजन उसकी संपत्ति पर कब्जा कर लेंगे, ''हाय सब लोग मुझे लूट ले जायेंगे। जाने वाला चला गया, इन भाइयों ने चौदह साल कभी दस पैसे का पोस्टकार्ड भी नहीं लिखा।'' 'तफरीह' निम्नवर्गीय समाज के जीवन साँक रही है, तभी तो उसे मकान में अपनी पहचान छिपाकर चूहों के साथ सह–अस्तित्व बनाकर रहने के लिए विवश होना पड़ा है। अभावग्रस्तता की वजह से ही मात्र पचहत्तर पैसे बचाने के लिए पत्नी पति को जूस के क्यू से हटाती है, ''यहाँ दो रुपये का गिलास मिलता है–माहिम में यही गिलास सवा रुपये में आ जाएगा।'' 'लाल तिकोन' परिवार नियोजन का प्रतीक होता है। इंदिरा गांधी की सरकार से पूर्व भारत में परिवार नियोजन की कोई अवधारणा नहीं थी। कदाचित इसका कारण भारतीय संस्कार है। भारत में बच्चे भगवान की देन माने जाते हैं किन्तु सन् 1970 के बाद यह अवधारणा बदली है। अब पति–पत्नी अपने सुविधानुसार बच्चों की संख्या निर्धारित करते हैं। 'लाल तिकोन' कहानी परिवार नियोजन न अपना पाए एक परिवार की कहानी है। वास्तव में इस कहानी में परिवार नियोजन न अपनाने की भूल पर हास्य मिश्रित व्यंग्य दिखाई पड़ता है। अगर 'लाल तिकोन' का सहारा लेकर व्यक्ति बच्चों की संख्या कम रखता तो उसे इतनी परेशानी न होती। 'लाल तिकोन' कहानी के बच्चे इतने चंचल और जिद्दी हैं कि बारह बजे रात को उठकर खेलना शुरू कर देते हैं। और माता–पिता की बात तक नहीं मानते। बच्चों की वजह से परिवार का रहन सहन भी प्रभावित होता है। 'लाल तिकोन' कहानी वात्सल्य भाव पर केन्द्रित है। उसके दिमाग पर पड़ा है। लंच के लिए जाते हुए उसने निश्चय किया कि एस एस का खत अब वह शाम को ही पले के टेलीफोन का तार काट दिया, छोटे की कुर्सी की बेंत काट दी और जाने से पहले बाथरुम का आदमकद आईना फोड़ दिया। फिर उसने केबिन की तरफ देखा। उसे लगा, केबिन अभी महफूज है। क्या वह अकेला केबिन को फोड़ पायेगा ? लिफ्ट पकड़ने के बजाय वह संस्कृति को नष्ट करने वाले लोगों को फटकार लगाई गयी है। ऐसे लोग जिनकी कथनी एवं करनी में काफी अंतर है, केवल दूसरे सम्प्रदाय का भय दिखाकर सामाजिक ताने–बाने को नष्ट करने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोगों को कहानी में कोसा गया है, ''क्या दशा हो गयी है ? तुम लोग हर क्षेत्र में आगे हो, गुलछर्रे, उड़ा रहे हो। तुम लोगों ने बड़े तमाम पद हथिया रखे हैं। हजारों वर्षों से देश में चली आ रही साझा संस्कृति के दुश्मन हो तुम लोग अपनी संस्कृत की कब्र खोद रहे हो तुम लोग।' लेखक बुजुर्गों से सांप्रदायिक सद्‌भाव की कोई उम्मीद नहीं करता। उसे यह आशंका रहती है कि साम्प्रदायिकता का जहर नई झूठ बोलने में इतना माहिर है कि लोगों को लगता है कि 'दादा दुबे' जैसे लोग सत्य बोल रहे हैं। कहानी राजनीति में बकर प्रेम को भले ही भूल जाय मगर उसके हृदय में प्रेम सदैव विद्यमान रहता है।

'मुहब्बत' कहानी में यह स्थापना है कि प्रेम में व्यक्ति को सब कुछ बदला हुआ और सुन्दर दिखाई पड़ता है। कहानी में नायक कपिल से मिलने के लिए तीस साल बाद जब उसकी प्रेमिका सरोज आती है तो वह पिकनिक ाती होगी। 'पूरे तिरिया चरित्तर जानती है, उसने सोचा, 'ऐसा आँखों से किसी और को देख लेगी तो बेचारा बेमौत मारा जाएगा। लगता है, मेरे लौटने से पहले जरूर कोई न कोई गुल खिला देगी।' [5] शिवलाल से और अधिक बर्दाश्त न हुआ तो बोला, 'अम्मा के साथ ही आया करो और रात को भीतर से कुंडी लगा के सोना।'' एक जमाना था जब जनकल्याण के लिए लोग नेता बनते थे। ऐसे लोग समाज में एक उच्च आदर्श स्थापित करते थे। मगर समय के साथ नेताओं का नैतिक, चारित्रिक पतन बहुत तेजी से हुआ है। उपन्यास में श्यामसुन्दर को मुख्यमंत्री प्रत्याशी बनाये जाने की संभावना है। व्यक्ति किया हुआ कर्म भूल जाता है लेकिन कर्म व्यक्ति को नहीं। ''अज़ीज़न ने तस्वीर की तरफ देखा। आज से बीस बरस पहले का दृश्य

उसकी आँखों में कौंध गया। श्यामसुन्दर हाथ में व्हिस्की का गिलास लिये दिलफेंक अंदाज में अज़ीजन को दाद दे रहे थे। बगल में सुन्दरगढ के महाराज बैठे थे। सुन्दरगे तबाह करने पर अमादा है। मगर मैंने भी धूप में बाल सफेद नहीं किए।' 'मगर मैंने तो धूप में ही बाल सफेद किये हैं' अज़ीज़न ने कहा, 'कल तिवारी जी का बड़का बेटा भी यही तस्वीर मांग रहा था। वह भी मुँह–माँगा दाम लगा रहा था।' श्यामसुन्दर छड़ी थामकर कुर्सी पर बैठे थे। छड़ी के साथ–साथ उनका हाथ हिलने लगा। 'मेरी आत्मा ने ठीक से आगाह किया था।' श्यामसुन्दर ने एक और गड्डी बगल की कुर्सी पर रख दी और अज़ीज़न से पूछे बगैर उठकर अपनी छड़ी से तस्वीर उतार ली।''[6] हम सब ऐसे समय में जीवन जीने को अभिशप्त हैं। जब धर्म के नाम पर हत्या, लूट, बलात्कार, जैसी विभत्स ढार–बार है न दोस्त अहबाब। होश संभाला तो अपने को स्टेशन पर पाया। वहीं कुछ खाने को मिल जाता तो खा लेता वरना प्लेटफार्म पर दरगाह के पास सो रहता। उसे नहीं मालूम वह हिन्दू है या मुसलमान।'' कार्ल मार्क्स के विचारों का आगमन पूरी दुनियां में एक क्रान्तिकारी परिरने बह रहे हैं। इस मुल्क में ऐसे दृश्य कहाँ ?''[7] माँ के अद्भुत वर्णन को सुनकर भारत में नदियों एवं झीलों की दुर्व्यवस्था पर ध्यान इंगित कराते हुए शीनी कहती है, ''माँ तुलना न किया करो। कैनेडा जैसी एक भी झील भारत में दिखा दो। अपनी पवित्र नदियों का रखरखाव तो भारत कर नहीं पाता।''8 भारतीय प्रवासी दूसरे देश में रहने के बावजूद अपने संस्कार एवं सामाजिक रूढ़ि तलाक यहाँ के हिन्दुस्तानियों के बीच होते हैं, किसी दूसरे मुल्क के लोगों के बीच न होते होंगे।''[8] फिर सामाजिक कुरीतियों पर उसका तीखा व्यंग्य इस प्रकार है, जब उसकी माँ उन्हें साँपिन का दर्जा देती है, ''तुम्हें गर्व होना चाहिए कि तुम्हारी ये सांपिनें दोहरी जिन्दगी नहीं जीतीं। जब मैं हिन्दुस्तानियों को यह कहते हुए सुनती हूँ कि आवर कंट्री इज़ वैरी वैरी ग्रेट तो मेरा बहुत मनोरंजन होता है। दलितों, अल्पसंख्यकों और अपनी बहुओं को जिन्दा जलाने वाली कौम जब नैतिकता और अहिंसा का वास्ता देती है तो मेरी हँसी छूट जाती है।'' भारतीय परिवेश से गये हुए भारतीय–जन विदेशों में वहाँ की नागरिकता, रहन–सहन एवं व्यवहारिकता सबकुछ बदल डालते हैं किन्तु जब बात अपनी शील रक्षक पेटी ही तो पहनाती रही हो। यह मानसिक पेटी तो असली पेटी से भी ज्यादा यंत्रणा देती है।''[9] पाश्चात्य लोग विचार, रहन–सहन एवं जीवन के हर पहलू पर खुले हुए हैं उन्हें कोई हिचक नहीं है। नेहा जब एस्टैला से पवित्र होने एवं वर्जनिटी से जुड़े सवाल पूछती है तो वह बेबाक होकर इस सम्बन्ध में चर्चा करती है।

निष्कर्ष

नेहा सारी बातों को जानने के बाद क्षुब्ध हो जाती है। एस्टैला नेहा को अपनी ओर खींचते हुए हिन्दुस्तानी माता–पिता के बनाये हुए प्रतिमान पर करारा व्यंग्य करती हुई कहती है, ''निराश न हो मेरी जान। यहीं से स्वर्ग के आनंद द्वार भी खुलते हैं। मेरे लिए तो प्रत्येक वीकएंड एक नयी एक्सरे सी, एक नया हर्षोन्माद लेकर आता है। तुम अभी बच्ची हो, ये बातें तुम्हारी समझ में न आयेंगी। मैंने सुना है ज्यादा हिन्दुस्तानी लड़कियाँ उसी तरह वर्जेनिटी को चिपकाये` लगता है, बहुत से पेरे ट्स बच्चों के यौनजीवन से ईर्ष्या करने लगते हैं और उन्हें काल्पनिक खतरों से डरा धमकाकर प्रताड़ित करते रहते हैं।'' [10] नेहा एस्टैला की इन बातों का विरोध करते हुए कहती है, ''हिन्दुस्तानी पेरेंट्स तो ऐसा नहीं करते। हमारे यहाँ हर काम के लिए उम्र तय है।'' हिन्दुस्तान और कैनेडा के लोगों की सोच के अन्तर को दर्शाती हुई एस्टैला का कथन है, ''तुम तो नाराज हो रही हो। फर्क सिर्फ इतना है कि हम किसी दूसरे को अपना भविष्य तय करने की इजाजत नहीं देते।'' यहाँ दो परस्पर हम उम्र लेकिन दो अगल मुल्कों की पीसिै शादी करोगी ?'' शर्म से सकुचायी शील के हाँ कहने के बाद 'न' कहने पर प्रोफेसर कहता है, ''शादी तय समझो। जाकर पिता से कहो, तुम्हारी शादी की तैयारी करें।'' शील आश्चर्यचकित होकर पूछती है, ''यह कैसे हो सकता है सर ?''

संदर्भ सूची

1. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ– रवीन्द्र कालिया, पृ0 4–5
2. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ– रवीन्द्र कालिया, पृ0 136
3. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ– रवीन्द्र कालिया, पृ0 140
4. वही, पृ0 147
5. खुदा सही सलामत है–रवीन्द्र कालिया, पृ0 291
6. खुदा सही सलामत है–रवीन्द्र कालिया, पृ0 45 2 वही, पृ0 127
7. ए.बी.सी.डी.–रवीन्द्र कालिया, पृ0 14
8. वही पृ0 17
9. वही पृ0 18
10. रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ पृ0 30